शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

# शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 50 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 50 अंक – 24 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2026 सोमवार 09 – 16 जून 2025 मूल्य पांच रूपये

# प्रदेश कांग्रेस को क्यों नहीं मिल रहा नया अध्यक्ष?

**शिमला/शैल।** प्रदेश कांग्रेस के नये अध्यक्ष का चयन क्यों नहीं हो पा रहा है? यह सवाल अब आम चर्चा का विषय बनता जा रहा है। क्योंकि सात माह पहले प्रदेश अध्यक्षा श्रीमती प्रतिभा सिंह को छोड़कर राज्य से लेकर ब्लॉक स्तर तक की सारी कार्यकारिणीयां भंग कर दी गई थी। तब यह तर्क दिया गया था कि निष्क्रिय पदाधिकारी के स्थान पर नये कर्मठ लोगों को संगठन में जिम्मेदारियां दी जायेंगी। नये लोगों की तलाश के लिये एक पर्यवेक्षकों की टीम भेजी गई थी। इस टीम की रिपोर्ट पर नये पदाधिकारी का चयन होगा। लेकिन कोई परिणाम सामने नहीं आया। इसी बीच राजीव शुक्ला की जगह रजनी पाटिल को प्रभारी बनाकर भेज दिया गया। रजनी पाटिल ने भी बड़े आश्वासन दिये परन्तु स्थितियां नहीं बदली। प्रदेश अध्यक्षा प्रतिभा सिंह ने यह स्वीकार किया कि राहुल गांधी से भी आग्रह किया गया था की नई कार्यकारिणी का गठन शीघ्र किया जाये। लेकिन इसका भी कोई परिणाम नहीं निकला। इसी बीच प्रदेश अध्यक्ष भी नया ही बनाये जाने की चर्चा चल पड़ी है। इस चर्चा पर प्रतिभा सिंह का यह ब्यान आया था कि नया अध्यक्ष रबर स्टैंप नहीं होना चाहिये। पिछले दिनों यह भी चर्चा में रहा कि नया अध्यक्ष अनुसूचित जाति से होगा यह सिद्धांत रूप से तय हो गया है। इस दिशा में कई नाम भी चर्चित हुये और कहा गया कि नया अध्यक्ष और प्रदेश मंत्रिमंडल का विस्तार एक साथ ही हो जायेगा। क्योंकि मंत्रिमंडल में एक स्थान खाली चल रहा है। लेकिन जो परिस्थितियों चल रही हैं उनके अनुसार अभी निकट भविष्य में ऐसा कुछ होता नजर नहीं आ रहा है।

> कोई भी मंत्री अपना पद छोड़कर संगठन की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं।

प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बने अढ़ाई वर्ष का समय हो गया है। विधानसभा चुनाव के दौरान प्रतिभा सिंह प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्ष थी लेकिन जब मुख्यमंत्री के चयन की बात आयी तब प्रदेश अध्यक्ष कि उस चयन में कितनी भागीदारी रही यह पूरा प्रदेश जानता है। बल्कि मुख्यमंत्री के बाद जब मंत्री परिषद का विस्तार और इस विस्तार से पहले कितना अभियान दिया गया यह भी पूरा प्रदेश जानता है। बल्कि मंत्रिमंडल के विस्तार के बाद तो संगठन और सरकार सीधे-सीधे दो अलग ध्रुवों की तरह जनता के सामने आते चले गये। सक्रिय कार्यकर्ताओं को सरकार में सम्मानजनक समायोजन दिया जाये इसके लिये हाईकमान तक से शिकायतें हुई और एक कोआर्डिनेशन कमेटी तक का गठन हुआ लेकिन इस कमेटी से कितनी सलाह ली गयी यह सब भी जग जाहिर हो चुका है। व्यवहारिक रूप से सरकार के सामने संगठन की भूमिका ही नहीं रह गयी है। संगठन की भूमिका ही सरकार के आगे पूरी तरह से गौण हो चुकी है। आज सरकार के सामने संगठन का कोई स्थान ही नहीं रह गया है और निकट भविष्य में इसमें कोई बदलाव आने की भी संभावना नहीं दिख रही है। आज यह स्थिति बन गयी है की सरकार की भी संभावना नहीं दिख रही है। आज यह स्थिति बन गयी है कि सरकार के सामने संगठन की शायद कोई आवश्यकता ही नहीं रह गयी है। इसलिये अगला अध्यक्ष कौन बनता है और उसकी कार्यकारिणी की क्या शक्ल होती है इसका तब तक कोई अर्थ नहीं होगा जब तक सरकार के अपने आचरण में परिवर्तन नहीं होता।

क्योंकि संगठन तो सरकार के फैसलों को जनता में ले जाने का माध्यम होता है। लेकिन आज प्रदेश सरकार जिस तरह के फैसले लेती जा रही है उससे सरकार और आम जनता में लगातार दूरी बढ़ती जा रही है। कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव के दौरान लोगों को जो दस गारंटियां दी थी उनकी व्यवहारिक अनुपालना शून्य है। कांग्रेस का कार्यकर्ता सरकार का क्या संदेश लेकर जनता के बीच में जायेगा। राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जीतने विवादित होते जा रहे हैं उसी अनुपात में प्रदेश सरकार केंद्र पर आश्रित होती जा रही है। प्रदेश भाजपा इस स्थिति का पूरा-पूरा राजनीतिक लाभ उठाती जा रही है। वित्तीय स्थिति इस कदर बिगड़ चुकी है कि उसकी आड़ लेकर केंद्र कब प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू कर दे यह आशंका बराबर बनी हुई है। जिस सरकार के मुख्यमंत्री के अपने प्रभार के विभाग में एक वरिष्ठ अधिकारी की मौत के कारणों की जांच उच्च न्यायालय को सी.बी.आई. को सौंपनी पड़ जाये और वह मौत आत्महत्या की जगह हत्या की ओर इंगित होती जाये उस सरकार की सामान्य स्थिति को क्या कहा जायेगा। यही नहीं इसी सरकार के मुख्य सचिव के सेवा विस्तार का मामला जिस मोड़ पर उच्च न्यायालय में खड़ा है क्या वह केंद्र और राज्य के संबंधों की व्यवहारिकता की ओर एक बड़ा संकेत नहीं है। आने वाले दिनों में प्रदेश सरकार के यह फैसले राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनेंगे यह तय है।

इस वस्तु स्थिति में यह सवाल बराबर ध्यान आकर्षित करता है कि क्या कांग्रेस हाईकमान के सामने प्रदेश के यह मुद्दे नहीं पहुंचे हैं? क्या हाईकमान इतने गंभीर मामलों के बारे में अभी तक अनभिज्ञ ही है? कांग्रेस जहां भी चुनाव में जायेगी वहीं पर उसे कुछ आश्वासन देने पड़ेंगे। कुछ घोषणाएं करनी पड़ेगी। क्या उस समय कांग्रेस हाईकमान की विश्वसनीयता पर हिमाचल की कांग्रेस सरकार का आचरण प्रश्नचिन्ह नहीं लगायेगा? क्या यह हाईकमान के संज्ञान में यथास्थिति लाना प्रदेश प्रभारी की जिम्मेदारी नहीं बनती? क्या किसी प्रदेश की वित्तीय स्थिति और वहां के संसाधनों का अनुमान लगाये बिना क्या कोई चुनावी वायदे किये जाने चाहिए? क्या वित्तीय स्थिति का प्रभाव सरकार के अपने आचरण पर नहीं दिखना चाहिए? इस मानक पर हिमाचल सरकार बुरी तरह उलझी हुई है। आज हिमाचल में कोई भी नेता संगठन की जिम्मेदारी लेने के लिये शायद तैयार नहीं है। कोई भी मंत्री अपना मंत्री पद छोड़कर संगठन की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है और इसी से सरकार के व्यवहारिक प्रभाव का पता चल जाता है।

# एचपीएसइडीसी राज्य के लोगों को देगा विदेशों में नौकरी करने के अवसर

**शिमला/शैल।** राज्य सरकार प्रदेश के लोगों को विदेशों में नौकरी के अवसर प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रही है। इस दिशा में विदेश मंत्रालय से हिमाचल प्रदेश इलैक्ट्रिोनिक्स विकास निगम (एचपीएसइडीसी) को भर्ती एजेंट लाइसेंस प्राप्त हो गया है। इसके अनुसार निगम को आधिकारिक तौर पर भर्ती करने की गतिविधियां शुरू करने की अनुमति मिल गई है। यह प्रमाण पत्र निगम को विदेशी नियोक्ताओं के लिए भारतीय श्रमिकों की भर्ती करने के लिए अधिकृत करता है।

एचपीएसइडीसी के प्रबंध निदेशक डॉ. वीरेंद्र शर्मा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश अब भारत के उन अग्रणी राज्यों में शुमार हो गया है जो निजी लाइसेंस धारकों के माध्यम से नहीं बल्कि सरकारी स्तर पर श्रमिकों को विदेश में रोजगार प्रदान करेगा। इससे विदेश में रोजगार के इच्छुक लोगों को गुमराह होने से बचाया जा सकेगा और उन्हें रोजगार के उचित अवसर प्रदान किए जाएंगे।

इससे अब निगम अन्तरराष्ट्रीय रोजगार नियुक्तियों को नियंत्रित करने वाले नियमों की अनुपालना सुनिश्चित कर सकेगा। भर्ती एजेंट लाइसेंस निगम की विश्वसनीयता और कानूनी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करेगा। राज्य के लोगों को विदेशों में नौकरी करने के अवसर उपलब्ध होंगे।

# राज्यपाल ने वैज्ञानिक अनुसंधान में पारंपरिक ज्ञान के महत्त्व पर बल दिया

**शिमला/शैल।** राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद आईसीएफआरई हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के सहयोग से हिम विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन द्वारा आयोजित 12वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ किया। प्रारंभिक सत्र को संबोधित

करते हुए राज्यपाल ने युवा वैज्ञानिकों से पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित और एकीकृत करने के साथ-साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान का वास्तविक उद्देश्य मानवता का कल्याण होना चाहिए, न कि उसका विनाश।

राज्यपाल ने पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचारशील और भविष्योन्मुखी चर्चा के लिए आयोजकों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी को स्थानीय परंपराओं, स्वदेशी ज्ञान और प्रकृति के साथ जोड़ा जाना चाहिए, जिससे इनकी सार्थकता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि जब हम प्रौद्योगिकी के एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, तो ज्ञान की हमारी समृद्ध विरासत को आधुनिक नवाचार के साथ जोड़ना महत्त्वपूर्ण है और यह सम्मेलन इस दिशा में सराहनीय पहल है। हिमाचल प्रदेश की अनूठी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत पर प्रकाश डालते हुए राज्यपाल ने कहा कि हिमाचल जैसे पारिस्थितिकीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण की पहल न केवल स्थानीय संदर्भ में बल्कि वैश्विक विमर्श में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। उन्होंने कहा कि यदि हम अपनी युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय विरासत पर शोध करने और उसे महत्त्व देने के लिए प्रेरित कर सकें, तो भारत वैश्विक कल्याण में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

राज्यपाल ने प्राकृतिक सुंदरता के लिए पर्यटकों के बीच लोकप्रिय होने के बावजूद पहाड़ी राज्य में बढ़ते प्रदूषण के स्तर पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इनमें से कई चुनौतियों का समाधान पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के माध्यम से किया जा सकता है।

स्वदेशी उन्नति का उदाहरण देते हुए राज्यपाल ने कहा कि भारत की स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली ज्ञान प्रणालियों में अनुसंधान के महत्त्व का प्रमाण है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विविध वैज्ञानिक विषयों के विद्वान इस मंच का उपयोग नवाचार, स्थिरता और सामाजिक आवश्यकताओं से संबंधित समकालीन मुद्दों का समाधान करने वाले शोध परिणामों को प्रस्तुत करने के लिए करेंगे।

राज्यपाल ने नशीली दवाओं के दुरुपयोग के दुष्प्रभावों के बारे में भी चर्चा की।

इस अवसर पर राज्यपाल ने हिम विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के प्रकाशन का विमोचन किया और कुमारी ओशीन और शवीन चोर्टा को 'चोफला पुरस्कार' से सम्मानित किया।

पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आदर्श पाल विग ने कहा कि विकास म डल में अर्थशास्त्र और पर्यावरण को साथ-साथ चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि अर्थशास्त्र पर तो पूरा ध्यान दिया गया है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण प्राथमिकता होने के बावजूद पिछड़ गया है। उन्होंने कहा कि 'मेरा पर्यावरण, मेरी जिम्मेदारी' हर व्यक्ति का मार्गदर्शक सिद्धांत होना चाहिए। उन्होंने राज्य में प्लास्टिक की बोतलों पर प्रतिबंध लगाने की पहल के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार की भी सराहना की।

हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीटयूट के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत किया।

डीआरडीओ बेंगलुरु के वैज्ञानिक डॉ. दिलीपबाबू विजयकुमार, आईआईटी दिल्ली के पूर्व प्रोफेसर और हिम विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के मुख्य संरक्षक प्रो. भुवनेश गुप्ता और एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. दीपक पठानिया ने भी सम्मेलन को संबोधित किया और पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर विचार साझा किए।

# संसदीय राजभाषा समिति ने राज्यपाल से भेंट की

**शिमला/शैल।** संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप-समिति ने राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से भेंट की। उप-समिति के सदस्यों ने राज्यपाल को प्रदेश के दौरे तथा विभिन्न केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग

के निरीक्षण से अवगत करवाया। उप-समिति 11 से 15 जून तक शिमला तथा आसपास के क्षेत्रों के आधिकारिक दौरे पर है तथा राजभाषा नीति के अनुपालन का आकलन करने के लिए केंद्रीय सरकारी संस्थानों का निरीक्षण कर रही है।

सदस्यों ने राज्यपाल को अवगत कराया कि संसदीय राजभाषा समिति एक उच्च स्तरीय निकाय है, जिसका गठन 1976 में राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत किया गया था।

केंद्रीय गृह मंत्री समिति के अध्यक्ष हैं जिसमें कुल 30 संसद सदस्य हैं। 20 सदस्य लोकसभा तथा 10 राज्यसभा से हैं। उन्होंने बताया कि समिति को देश भर में केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग का निरीक्षण करने तथा भारत के राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने का दायित्व सौंपा गया है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने समिति के सदस्यों की सराहना करते हुए पारंपरिक हिमाचली शॉल, टोपी और पौधे भेंट कर सम्मानित किया।

# मुख्यमंत्री ने ज़िला कांगड़ा में विभिन्न विकास परियोजनाओं की समीक्षा की

**शिमला/शैल।** मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने ज़िला कांगड़ा के धर्मशाला व विभिन्न उपमंडलों में निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं

के कार्य की प्रगति की समीक्षा की।

उन्होंने धर्मशाला में एकता मॉल पीएम यूनिटी मॉल के निर्माण से संबंधित विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कहा कि 'एक ज़िला-एक उत्पाद' महत्त्वाकांक्षी पहल है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक ज़िले में एक विशिष्ट उत्पाद को बढ़ावा देना है। योजना क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने, रोज़गार के अवसर सृजित करने, स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि ज़िला कांगड़ा में सभी परियोजनाओं के निर्माण के लिए भूमि हस्तांतरण व वन से संबंधित स्वीकृतियों का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में आतिथ्य क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। इससे रोज़गार व स्वरोज़गार के अवसर भी सृजित होंगे और क्षेत्र की आर्थिकी भी सुदृढ़ होगी।

मुख्यमंत्री ने कांगड़ा ज़िला के विभिन्न उप-मंडलों मे निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं की समीक्षा भी की।

# अगले वर्ष से सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना वैज्ञानिक पद्धति से होगी: बागवानी मंत्री

**शिमला/शैल।** राजस्व, बागवानी, जनजातीय विकास एवं जनशिकायत निवारण मंत्री जगत सिंह नेगी ने आगामी सेब सीजन की तैयारियों के लिए हितधारकों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि इस वर्ष सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना प्रस्तुत नहीं की जाएगी। इससे बाज़ार पर दुष्प्रभाव पड़ता है और बागवानों को नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष से सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना वैज्ञानिक

पद्धति से की जाएगी।

बैठक में विभिन्न मामलों पर चर्चा हुई और सेब सीजन के दौरान पेश आने वाली चुनौतियों और समस्याओं के समाधान के लिए विस्तृत मंथन हुआ। इस प्रक्रिया में संभावित समाधानों के बारे में गहराई से विचार किया गया और व्यापक दृष्टिकोण से समस्याओं का विश्लेषण किया गया। बैठक में दो सब कमेटी बनाने का निर्णय भी लिया गया। इसके तहत एपीएमसी एक्ट-2005 को सख्ती से लागू करने का प्रावधान होगा। वहीं दूसरी सब कमेटी में एसआईटी गठित करने, उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, नर्सरी के विकास और उच्चस्तरीय अनुसंधान, विभिन्न हितधारकों की समस्याओं के समाधान करने पर ध्यान केंद्रित रहेगा।

इसके साथ बड़े सीए स्टोर बनाने की बजाय छोटे सीए स्टोर का निर्माण करने पर सहमति बनी। इसके अंतर्गत ऑटोमैटिक ग्रेडिंग सॉर्टिंग मशीन स्थापित की जाएंगी जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में प्रदेश के सेब की मांग बढ़ेगी। छोटे आकार के सीए स्टोर का निर्माण करने से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा और उनकी सेब की फसल को सीए स्टोर में भी रखा जा सकेगा। इससे हर गांव में सीए स्टोर बनाए जा सकेंगे और बागवानों को भी पूरी सुविधा मिलेगी और उन्हें फसल के अच्छे दाम भी मिलेंगे।

बागवानी मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मार्केट यार्ड के बाहर सेब कारोबारियों के लाइसेंस का डिजिटल डिस्पले सुनिश्चित किया जाए और इसका उलंघन करने वालों के चालान किए जाएं। उन्होंने कहा कि सेब का वजन यूनिवर्सल कार्टन में ही होगा और 22 किलोग्राम से ज्यादा वजन पाए जाने पर माल ज़ब्त कर चालान किया जाए।

उन्होंने यूरोप की तर्ज पर बागवानों को को-आपरेटिव सोसायटी के गठन के जरिए अपनी फसल आढ़तियों को बेचने का सुझाव भी दिया।

जगत सिंह नेगी ने कहा कि आगामी सेब सीजन के दौरान सभी विभाग मिलकर बेहतर समन्वय से कार्य करें। जिला प्रशासन, पुलिस, लोक निर्माण विभाग और सभी एपीएमसी के अध्यक्ष भी इसमें अपना अहम योगदान दें। उन्होंने कहा कि सेब सीजन में यातायात सुचारू बनाए रखने के लिए एक बेहतर पुलिस मानक संचालन प्रक्रिया बनाई जाए ताकि बागवानों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

बागवानी संगठनों के प्रतिनिधियों ने सेब के आयात शुल्क पर चिंता व्यक्त की और प्रदेश सरकार से इस मुद्दे को केंद्र के समक्ष उठाने का आहवान किया। उनका कहना था कि आयात शुल्क कम किए जाने से प्रदेश के बागवानों की आर्थिकी बुरी तरह प्रभावित होगी। बागवानी मंत्री ने प्रतिनिधियों को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया।

शैल समाचार
संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादकः जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

# 5 से 30, जून 2025 तक होगा धरती आबा जन भागीदारी अभियान:जगत सिंह नेगी

**शिमला/शैल।** जनजातीय विकास मंत्री जगत सिंह नेगी ने कहा कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत 10 जिलों के 26 खंडों के तहत आने वाले 270 गांवों के लगभग 1,17,040 जनजातीय लोगों को इस योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण विकास, ऊर्जा, नवीकरणीय, ऊर्जा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, पैट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस, महिला एंव बाल विकास, शिक्षा, आयुष, दूरसंचार, कौशल विकास और उद्यमिता, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, मत्स्य पशुपालन एवं डेयरी, पंचायती राज, पर्यटन और जनजातीय मामले मंत्रालय शामिल किए गए हैं।

जगत सिंह नेगी ने कहा कि इन मंत्रालयों की चिन्हित योजनाओं हेतु पांच वर्ष की अवधि के लिए अस्थायी बजट आबंटन भी किया गया है जिसके लिए संबंधित विभागों द्वारा विश्लेषण अनुसार कार्य योजना तैयार की जानी है। इसके बाद केंद्र सरकार के संबंधित मंत्रालय को बजट आबंटन के लिए भेजा जाएगा।

उन्होंने कहा कि 15 से 30, जून 2025 तक एक विशेष अभियान के अंतर्गत जिलों के चिन्हित जनजातीय बहुल गांवों में विशेष सेवा शिविरों का आयोजन किया जाएगा जिसमें आधार कार्ड अपडेट तथा पंजीकरण, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जाति प्रमाण पत्र सहित अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। यह अभियान जिला एवं खंड स्तर पर प्रशासन द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा।

उन्होंने संबंधित विभागों, उपायुक्तों और खंड विकास अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश देते हुए कहा कि 15 से 30 जून तक धरती आबा जन भागीदारी अभियान को पूर्ण रूप से सफल बनाएं ताकि जनजातीय लोगों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी एवं लाभ प्राप्त हो सके।

# मुख्यमंत्री ने किन्नौर जिला के शिपकी-ला में सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारंभ किया

**शिमला/शैल।** मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने किन्नौर जिला

के सीमावर्ती क्षेत्र शिपकी-ला में सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमा पर्यटन गतिविधियों के आरम्भ होने से पर्यटन के साथ-साथ स्थानीय लोगों की आर्थिकी भी सशक्त होगी।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने रक्षा मंत्रालय से सीमावर्ती क्षेत्र लेपचा, शिपकी-ला, गिऊ और रानी कंडा में पर्यटन गतिविधियों को अनुमति प्रदान करने का आग्रह किया था। स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार कैलाश मानसरोवर यात्रा शिपकी-ला के रास्ते से शुरू करने का मामला केन्द्र सरकार के समक्ष उठाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह स्वयं प्रधानमंत्री से भेंट कर यह विषय उनके सामने प्रस्तुत करेंगे। शिपकी-ला से कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए सबसे सुगम मार्ग उपलब्ध होगा।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2020 से भारत चीन व्यापार शिपकी-ला के माध्यम से बंद है। इस दर्रे के माध्यम से व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की असीम संभावनाएं हैं। इसे पुन: आरम्भ करने का मामला भी केन्द्र सरकार के समक्ष उठाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने केन्द्र से हिमाचल स्काउट बटालियन की स्थापना का आग्रह किया है, जिसमें राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए विशेष कोटा होगा।

सीमावर्ती क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हवाई अड्डा स्थापित करने का मामला भी केन्द्र के समक्ष उठाया जाएगा । राज्य सरकार केन्द्र सरकार से सैन्य और अर्ध सैनिक बलों की इनर लाइन चेक पोस्ट को समाप्त करने का आग्रह करेगी, जिससे वर्तमान में पर्यटकों के लिए परमिट संबंधी बाधा उत्पन्न होती है।

यात्रा को सरल और पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिसके तहत भारतीय सेना और अर्ध सैनिक बलों के साथ सहयोग पर बल दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि इन कदमों से पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी।

उन्होंने कहा कि लाहौल-स्पीति जिला से किन्नौर को जोड़ने वाली वांगतू-अटरगू-मुद-भावा दर्रा मार्ग को राष्ट्रीय वन्य जीव बोर्ड से मंजूरी मिली है। जिससे इसके निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस सड़क के बनने से शिमला और काजा के बीच दूरी लगभग 100 किलोमीटर कम हो जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमावर्ती सड़कों का केवल सामरिक महत्त्व नहीं है, बल्कि इनका उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्रों में सम्पर्क सुविधा बढ़ाकर लोगों को लाभ प्रदान करना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमांत क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने की कार्य योजना के बारे में उन्होंने भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आई.टी.बी.पी.) से चर्चा की है। आई.टी.बी.पी. के स्वास्थ्य संस्थानों के माध्यम से लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। आई.टी.बी.पी. के विभिन्न हेलीपैड को दूर-दराज क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उपयोग में लाये जाने पर भी चर्चा की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें सेना और अर्ध सैनिक बलों के शौर्य पर नाज है। मुख्यमंत्री ने शिपकी-ला में सरहद वन उद्यान का शुभारम्भ भी किया। उन्होंने इंदिरा गांधी प्वाइंट भी विजिट किया।

राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शिपकी-ला में पर्यटन संबंधी सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी। उन्होंने क्षेत्र में हिमाचल पथ परिवहन निगम का ऑन डिमांड बस रूट आरम्भ करने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में क्षेत्र में विकास की गति प्रदान की गई है।

उन्होंने क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की।जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और अन्य गणमान्य इस अवसर पर उपस्थित थे।

ग्राम पंचायत नमग्या के प्रधान बलदेव नेगी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

इस अवसर पर स्थानीय महिला मंडलों ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक के अध्यक्ष देवेन्द्र श्याम, किनफेड के अध्यक्ष चन्द्र गोपाल नेगी, कमांडिग आफिसर 19, बिहार रेजीमेंट कर्नल नितिन शंकर, कमांडिंग आफिसर ।।, महार कर्नल जी.के. गुडे, कमांडेंट 43, आई.टी.बी.पी. सुरेन्द्र पंवार उपायुद्र अमित कुमार, पुलिस अधीक्षक अभिषेक एस, सेना, आई.टी.बी.पी., व जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और अन्य गणमान्य इस अवसर पर उपस्थित थे।

# राजेश धर्माणी ने विकासनगर व जाठिया देवी में वाणिज्यिक परिसर के निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए

**शिमला/शैल।** हिमाचल प्रदेश आवास एवं शहरी विकास प्राधिकरण हिमुडा के निदेशक मंडल की 56वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए नगर

नियोजन मंत्री राजेश धर्माणी ने हिमुडा द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

राजेश धर्माणी ने अधिकारियों को शिमला जिले के विकासनगर और माउंटेन सिटी जाठिया देवी में वाणिज्यिक परिसर के निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सरकारी भूमि के उपयोग और मौजूदा भवनों के आधुनिकीकरण के लिए पुनर्विकास नीति लाने पर बल दिया। नगर नियोजन मंत्री ने डिपोजिट कार्यो को तय समय अवधि में पूर्ण करने पर बल दिया। उन्होंने राज्य में बेहतर शहरी और आवासीय विकास के लिए निजी भागीदारी पर भी बल दिया ताकि क्षेत्र में अधिक निवेश के अवसर पैदा किए जा सकें।

बोर्ड ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 125.38 करोड़ रुपये के संशोधित बजट अनुमानों को मंजूरी दी। बैठक में धर्मशाला में 35 फ्लैट के निर्माण के साथ-साथ निजी भूमि की खरीद के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को भी मंजूरी दी गई।

बैठक की कार्यवाही का संचालन हिमुडा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं सचिव सुरेन्द्र कुमार वशिष्ठ ने किया।

इस अवसर पर हिमुडा के उपाध्यक्ष यशवंत छाजटा, प्रधान सचिव आवास देवेश कुमार, मुख्यमंत्री के सलाहकार इंप्र अनिल कपिल, हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग तथा जल शक्ति विभाग के वरिष्ठ अधिकारी तथा बोर्ड के गैर-सरकारी सदस्य जितेन्द्र चंदेल तथा प्रदीप सूर्या भी उपस्थित थे।

# हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को बढ़ावा देने की आवश्यकता:उद्योग मंत्री

**शिमला/शैल।** हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा निगम लिमिटेड के निदेशक मंडल की 194वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्योग

मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने अधिकारियों को राज्य के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों का एक प्रचार वीडियो तैयार करने के निर्देश दिए। इसका उद्देश्य राज्य के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को बड़े स्तर पर बढ़ावा देना है। प्रचार वीडियो को सोशल मीडिया और अन्य नेटवर्क पर अपलोड किया जाएगा।

उद्योग मंत्री ने राज्य के कारीगरों और बुनकरों को लाभान्वित करने के लिए निगम द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना की और निर्देश दिए कि निगम की योजनाओं और कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि विलुप्त होने के कगार पर पहुंची इस कला का प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए ताकि राज्य हथकरघा और हस्तशिल्प की विरासत को संरक्षित किया जा सके। उन्होंने प्रदेश के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की बिक्री के लिए चंडीगढ़ में शो-विंडो-कम-सेल काउंटर खोलने की संभावना तलाशने के निर्देश दिए। निगम 23.38 करोड़ रुपये की केंद्र प्रायोजित परियोजना, व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना सीएचसीडीएस, को क्रियान्वित कर रहा है, जिसकी अवधि तीन वर्ष है।

वर्ष 2023-24 के दौरान निगम ने 420 कारीगरों को लाभान्वित किया और 340 कारीगरों को उन्नत टूल किट वितरित किए। वर्ष 2024-25 के दौरान निगम ने 840 कारीगरों और बुनकरों को लाभान्वित किया और उन्हें उन्नत टूल किट वितरित किए। दिल्ली, धर्मशाला और मनाली में तीन एम्पोरियम का नवीनीकरण कार्य पूरा हो चुका है और तीन अन्य एम्पोरियम, जिसमें चंबा में दो और शिमला में एक एम्पोरियम शामिल है, का नवीनीकरण कार्य प्रगति पर है। वर्ष 2025-26 के दौरान, राज्य के लगभग 2500 कारीगरों के लिए 120 डिजाइन और तकनीकी विकास कार्यशालाएं और 20 उद्यमी विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी प्रकार, कारीगरों के उत्पादों की बिक्री के लिए राज्य के भीतर पांच विषयगत प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी, जिसके लिए दो नए एम्पोरियम खोले जाएंगे। निदेशक मंडल ने हिमाचल प्रदेश के कुशल बुनकरों द्वारा विकसित कारीगरी वाले ऊनी कपड़े हिमालयन ट्वीड पर विशेष बल देते हुए हथकरघा उत्पादों के विदेशी और भारतीय बाजारों में विस्तार के लिए निगम के प्रबंध निदेशक को अधिकृत किया।

निगम की प्रबंध निदेशक डॉ. ऋचा वर्मा ने निगम की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने निदेशक मंडल को बताया कि निगम ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान 29.98 करोड़ रुपये के हस्तशिल्प, हथकरघा और संबद्ध उत्पादों की बिक्री की है। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव उद्योग आर.डी. नजीम, निदेशक उद्योग डॉ. यूनुस, विशेष सचिव वित्त विजय वर्धन और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

# ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करना राज्य सरकार का ध्येय: मुख्यमंत्री

**शिमला/शैल।** राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा हिमाचल प्रदेश पशु एवं कृषि सखी संघ के एक

प्रतिनिधिमंडल ने शिमला में मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू से भेंट कर, अपनी विभिन्न मांगों से अवगत करवाया।

मुख्यमंत्री ने उनकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री ने उनसे संवाद करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के ध्येय से कार्य कर रही है। सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों को मजबूत बनाने के लिए अनेक अभिनव पहल की हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती पद्धति के उत्पादों को विशेष अधिमान दिया जा रहा है। प्रदेश के हिम ईरा व अन्य उत्पाद दूसरे प्रदेशों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार दूध, प्राकृतिक खेती से उगाए गेहूं, मक्की और हल्दी के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया गया है। महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की बिक्री के लिए ई-कॉमर्स 'हिम-ईरा' वेबसाइट शुरू की गई है। प्राकृतिक खेती कर रहे प्रदेश के एक लाख 58 हजार से अधिक किसानों को प्रमाणित किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक तरीके से उगाई गई मक्की का न्यूनतम समर्थन मूल्य 30 रुपये से बढ़ाकर 40 रुपये और गेहूं का 40 रुपये से बढ़ाकर 60 रुपये प्रतिकिलो किया है, जिससे हमारे लाखों किसानों को आर्थिक लाभ मिल रहा है।

प्रदेश में पहली बार प्राकृतिक हल्दी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार कच्ची हल्दी 90 रुपये प्रतिकिलो की दर से खरीदने जा रही है, जिसे हिमाचली हल्दी के नाम से बढ़ावा दिया जाएगा।

सत्य की खोज करने वाले को धूल से भी अधिक विनम्र होना चाहिए।

.....महात्मा गांधी

## सम्पादकीय

# राहुल बनाम मोदी होती राजनीति का अन्त क्या होगा?

क्या राहुल गांधी कांग्रेस के भीतर बैठे भाजपा के अपरोक्ष समर्थकों को बाहर कर पाऐगें? या राहुल की कारवाई से पहले ही नरेंद्र मोदी कांग्रेस में एक बड़ी सेंधमारी को अंजाम दे देंगे? यह सवाल देश की राजनीति के राहुल बनाम मोदी होते जाने के बाद उठने शुरू हो गये हैं । क्योंकि 2024 में भाजपा के मोदी के नेतृत्व में सत्ता में आने के बाद लगभग सभी छोटे बड़े राजनीतिक दलों में विघटन हुआ है और पार्टी छोड़कर जाने वाले नेताओं ने भाजपा में ही शरण ली है। बल्कि आज की भाजपा में दूसरे दलों से आये नेताओं की संख्या मूल भाजपाईयों से शायद बढ़ गयी। दूसरे दलों से तोड़ फोड़ में सरकार की एजेंसियों ईडी, सीबीआई और आयकर की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फिर राहुल गांधी को पप्पू प्रचारित और प्रमाणित करने के लिये एक विशेष अभियान चलाया गया जिसका खुलासा कोबरा पोस्ट ने अपने स्टिंग ऑपरेशन में देश के सामने रखा था। आज भी जितने ज्यादा आपराधिक मामले राहुल गांधी के खिलाफ बनाये गये हैं उससे भी यही प्रमाणित होता है कि नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा राहुल गांधी को ही अपना विकल्प मानती है। अन्ना और रामदेव के आन्दोलन से भाजपा कांग्रेस को सत्ता से हटाने में तो सफल हो गयी लेकिन अभी स्थापित नहीं हो पायी है क्योंकि आज नरेंद्र मोदी और भाजपा किसी समय कांग्रेस के खिलाफ उठाये अपने ही सवालों में बुरी तरह घिरते जा रहे है।

महंगाई, बेरोजगारी, आतंकवाद, काला धन और डॉलर के मुकाबले रुपये का लगातार कमजोर होते जाना ऐसे मुद्दे जिन्हे भाजपा ने एक समय कांग्रेस के खिलाफ बहुत बड़े स्तर पर उछाला था लेकिन आज यही मामले पहले से कई गुना बढ़ गये और उसी अनुपात में भाजपा मोदी से जवाब मांग रहे हैं। आज भाजपा मोदी यदि हिन्दू मुसलमान के विभाजनकारी एजैण्डे को छोड़कर अन्य किसी मुद्दे पर देश में एक सार्वजनिक बहस उठाना चाहे तो शायद उनके पास और कोई राष्ट्रीय मुद्दा रह ही नहीं गया है। अभी पहलगाम और उसके बाद हुए ऑपरेशन सिन्दूर में जिस तरह से समूचे विपक्ष ने सरकार को स्थिति से निपटने के लिये सरकार और सेना का समर्थन दिया उसमें अन्त में जिस तरह का आचरण सरकार ने देश के सामने रखा है उससे स्वयं ही विवादों में आ खड़ी हो गई है। क्योंकि पहलगाम के वह चारों दोषी आज तक पकड़े नहीं गये हैं। सेना ने जिस तरह से दुश्मन देश को उसके घर में घुसकर नुकसान पहुंचाया था उससे उम्मीद बंधी थी कि इससे सीमा पार से पोषित आंतकवाद से स्थायी तौर पर निपटारा हो जायेगा। लेकिन जिस तरह से ट्रंप के दखल से सीजफायर हुआ उससे सरकार की जो कमजोरी विदेश नीति के मामले में सामने आयी है उससे भाजपा मोदी पर ऐसे स्थायी प्रश्न चिपक गये हैं जिनसे छुटकारा पाना असंभव हो गया है। ऐसे में यह आशंकाएं उभर रही है कि भाजपा–मोदी इस सबसे बचने के लिये जहां यह कहने लग गये हैं कि ट्रंप के ब्यानों पर विश्वास करने की वजाये मोदी पर विश्वास किया जाना चाहिए यह इस बात का संकेत बनता जा रहा है कि शायद अब भाजपा के कुछ कोने में मोदी पर अविश्वास बढ़ने लग पड़ा है। आज भाजपा जब अपना नया अध्यक्ष चुनने में ही उलझ गयी है तो स्पष्ट हो जाता है कि संघ भाजपा के रिश्तों में भी शायद दरारे आना शुरू हो गयी हैं। इस वस्तु स्थिति में अपने विकल्प को जनता में कमजोर प्रमाणित करने के लिये कांग्रेस के अन्दर किसी बड़ी तोड़फोड़ की बिसात का बिछाया जाना भाजपा मोदी की तात्कालिक आवश्यकता बन सकती है। क्योंकि यह राहुल गांधी के ही प्रयासों का परिणाम था की लोकसभा में भाजपा 400 पार की 240 पर ही रुक गयी। अब तो स्थितियां और प्रतिकूल है ऐसे में कांग्रेस की सरकारों में किसी तोड़फोड़ की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

# भारत में इस्लामोफोबिया के प्रचार में लगा पश्चिमी जमात, हकीकत के उलट है वास्तविकता

गौतम चौधरी

अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों और अधिवक्ताओं के समूहों की ओर से लगाए जा रहे आरोपों की बढ़ती बाढ़ ने भारत को वैश्विक स्तर पर कड़ी जांच के दायरे में ला दिया है। दरअसल, दावा किया जा रहा है कि भारत में इस्लामोफोबिया बढ़ रहा है। हालांकि, इनमें से कई दावों की बारीकी से जांच करने पर अतिशयोक्ति, गलत सूचना और कई बार जानबूझकर तोड़–मरोड़ का एक पैटर्न सामने आया है, साबित करता है कि इस मामले में कुछ पूर्वाग्रही तो कुछ भारत विरोधी ताकत अपने हितों के लिए ऐसा कर रहे हैं। मसलन, इससे संबंधित अक्सर आधिकारिक आंकड़ों का जांच अभिकरणों और स्वतंत्र न्याय प्रणाली ने लगातार खंडन किया है। आज हम भी इस मामले के कुछ तथ्यों की पड़ताल करने वाले हैं।

जनवरी 2024 में, ह्यूमन राइट्स वॉच नामक एक स्वतंत्र संगठन ने अपने दक्षिण एशिया बुलेटिन में एक वीडियो का संदर्भ दिया, जिसमें कथित तौर पर उत्तर प्रदेश में एक मुस्लिम युवक को उसकी आस्था के कारण प्रताड़ित किया जा रहा था। यह वीडियो वायरल हो गया और कई अंतरराष्ट्रीय मीडिया आउटलेट्स में इसका हवाला दिया गया। हालांकि, ऑल्ट न्यूज़ के तथ्य–जांचकर्ताओं ने फुटेज को 2022 की एक असंबंधित रोड रेज घटना से जोड़ा, जिसका कोई सांप्रदायिक मकसद नहीं था। इस मामले में उत्तर प्रदेश पुलिस ने सांप्रदायिक पहलू को खारिज करते हुए एक आधिकारिक बयान जारी किया और भ्रामक कैप्शन के साथ वीडियो फैलाने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी की। बूम लाइव, इंडिया टुडे फैक्ट चेक और पीआईबी फैक्ट चेक ने इसी तरह के उदाहरणों को चिह्नित किया है, जिसमें एक प्रवृत्ति का खुलासा हुआ है, जहां चुनिंदा फुटेज और अपुष्ट साक्ष्य का उपयोग करके सांप्रदायिक कथाएं गढ़ी जाती है और या सनसनीखेज बना कर लोगों के सामने प्रस्तुत कर दिया जाता है।

भारत का कानूनी ढांचा धर्मनिरपेक्षता के प्रति दृतसंकल्पित है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 25 भारत के प्रत्येक नागरिकों को समानता का अधिकार देता है। यही नहीं धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, अभ्यास करने और प्रचार करने की भी गारंटी देता है। न्यायपालिका ने सांप्रदायिक संघर्ष से जुड़े मामलों में लगातार हस्तक्षेप किया है, जिसमें पीड़ितों के लिए मुआवज़ा देने, स्वतंत्र जाँच के आदेश देने और नफ़रत फैलाने वाले भाषणकर्ताओं को दंडित करने का निर्देश शामिल है। 2023 में, दिल्ली उच्च न्यायालय ने राज्य बनाम अंकित शर्मा में, 2020 के दंगों के दौरान हत्या के दोषी पाए गए लोगों के लिए आजीवन कारावास की सज़ा को बरकरार रखा। यह दर्शाता है कि न्यायपालिका शामिल लोगों की धार्मिक पहचान की परवाह किए बिना कड़े फ़ैसले सुनाने से नहीं कतराती है। इस बीच, कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ भी नफ़रत फैलाने वाले भाषणों पर नज़र रख रही हैं और ग़ाज़ियाबाद के डासना के यति नरसिंहानंद जैसे अतिवादियों के खिलाफ निष्पक्ष रूप से मामले दर्ज कर रही हैं( जो अपने इस्लाम विरोधी बयानों के लिए चर्चा में रहते हैं।

दिसंबर 2024 में संसद में पेश गृह मंत्रालय की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्ष की तुलना में देश भर में सांप्रदायिक हिंसा के मामलों में 12.5 प्रतिशत की कमी आई है। महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने 2024 में दस से भी कम घटनाओं की सूचना दी, जो सक्रिय सामुदायिक आउटरीच और पुलिसिंग कार्यक्रमों के कारण संभव हो पाया है। इसके अलावा, एनसीआरबी के आँकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि सांप्रदायिक हिंसा के मामलों में सज़ा में वृद्धि हुई है, जबकि पंजीकृत घृणा अपराधों की संख्या समान चुनौतियों का सामना करने वाले अन्य देशों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से कम है।

एक स्वतंत्र अभिकरण का दावा है कि स्वतंत्र भारतीय पत्रकारों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने धार्मिक तनाव के वास्तविक मामलों और झूठे आख्यानों दोनों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। द वायर, स्क्रॉल.इन और इंडियास्पेंड ने सांप्रदायिक घटनाओं के पीछे के सामाजिक–राजनीतिक कारकों पर व्यापक रूप से रिपोर्ट की है, साथ ही गलत सूचना सामने आने पर सुधार या स्पष्टीकरण भी प्रकाशित किए हैं। मार्च 2024 में, द क्विंट ने मध्य प्रदेश में कथित 'बीफ़ लिंचिंग' के बारे में एक वायरल दावे की जाँच की। जांच में स्पष्ट हुआ कि इस मामले में धर्म का कोई एंगल था ही नहीं। उक्त समाचार एजेंसी ने दावा किया था कि उन्होंने एफआईआर विवरण और प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों के आधार पर अपनी रिपोर्ट जारी की। इस मामले में बीफ लिंचिंग का कोई मामला था ही नहीं। यह मामला संपत्ति विवाद का था। फिर भी इस कहानी को पहले ही अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगों ने 'हिंदू भीड़ हिंसा' का आरोप लगाते हुए सुर्खियों में लाया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2023 में जी20 इंटरफेथ डायलॉग सहित कई मंचों पर इस मुद्दे को संबोधित किया है, जहां उन्होंने कहा – ''भारत की ताकत इसकी विविधता में निहित है। हमारे संविधान या संस्कृति में नफरत के लिए कोई जगह नहीं है।'' इसी तरह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अक्टूबर 2023 में फ्रांस 24 के साथ एक साक्षात्कार में ''अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों द्वारा एजेंडा–संचालित आख्यानों'' की आलोचना की और ''ज़मीनी तथ्यों के साथ अधिक ईमानदार जुड़ाव'' का आहवान किया। कुछ विश्लेषकों का तर्क है कि ये अभियान भू–राजनीतिक रूप से प्रेरित हैं। इस मामले में एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीटयूट के प्रो. सी. राजा मोहन कहते हैं, ''ये समूह अपने घरों में अधिकारों के उल्लंघन को अनदेखा करते हुए चुनिंदा रूप से भारत को निशाना बनाते हैं। यह मानवाधिकारों के बारे में कम और वैचारिक लाभ के बारे में अधिक है सक्रिय रहते हैं।''

भारत, किसी भी बहुलवादी समाज की तरह, जटिल अंतर–सामुदायिक गतिशीलता का सामना करता है लेकिन देश को व्यवस्थित रूप से इस्लामोफोबिक के रूप में चित्रित करने में अनुभवजन्य समर्थन का अभाव है। हमारा संविधान और न्यायिक तंत्र अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने में सक्षम है। यह भी सत्य है कि गलत सूचना, चाहे जानबूझकर हो या लापरवाही से, उसी शांति को खतरे में डालती है जिसकी रक्षा करने का दावा किया जाता है। ऐसे समय में जब तथ्यों को हथियार बनाया जा सकता है या वायरल आक्रोश के नीचे दबा दिया जा सकता है, सत्यापन और संतुलन की जिम्मेदारी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय दोनों की है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में अपनी यात्रा जारी रखे हुए है। भारत दुनिया की चुनौतियों से अलग नहीं है। दुनिया के सामने जो चुनौतियां है वही चुनौती भारत के सामने भी है। ऐसे में दुनिया को भी चाहिए कि भारत को अपनी चुनौतियों का सामना करने में सहयोग करे न कि केवल अपने अपने राष्ट्रीय हितों की चिंता करें और महज कुछ पूर्वाग्रहों के कारण भारत की सकारात्मक छवि को नकारात्मक बना कर प्रस्तुत करे।

# सावणी देवी ने अन्य महिलाओं को भी दिखाई आत्मनिर्भरता की राह

**शिमला।** हुनर की पहचान हो और मन में कुछ करने का ज़ज्बा, तो कोई भी राह मुश्किल नहीं होती। यही कुछ साबित किया है बल्ह घाटी के चंडयाल गांव की सावणी देवी ने। कोरोना काल में एक दिन के भोजन के लिए मोहताज सावणी देवी ने अपनी कड़ी मेहनत से न केवल परिवार की आर्थिक मदद की, अपितु कई अन्य महिलाओं को स्वावलंबन की राह भी दिखाई। जरिया बना स्वयं सहायता समूह।

बकौल सावणी देवी वह काफी अरसे से दुर्गा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। यह समूह सीरा – बड़ियां, आचार, दलिया, बुरांश जूस से लेकर सोया मटर, आंवला कैंडी व नमकीन जैसे खाद्य उत्पाद घरेलू स्तर पर तैयार करता है। समूह से सात – आठ महिलाएं जुड़ी हैं। उन्होंने बताया कि पति व दो बेटे निजी क्षेत्र में कार्य करते हैं। कोरोना काल में पति बीमार हो गए और काम के अवसर भी घट गए। ऐसे में सिलाई का कार्य काम आया और उधारी पर कपड़ा लेकर मास्क बनाकर किसी तरह रोजी – रोटी का इंतजाम किया।

सावणी कहती हैं कि स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहन देकर प्रदेश सरकार उन जैसी हजारों महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन की राह प्रशस्त कर रही है। उन्हें गेहूं पीसने की मशीन व सामग्री के लिए सरकार की ओर से 50 हजार रुपए की सहायता मिली। सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम पीएमएफएमई योजना के तहत भी 57 हजार रुपए की वित्तीय मदद मिली। उनका समूह गेहूं खरीद कर सीरा बनाने का कार्य करता है। प्रतिमाह लगभग 60 कि.ग्रा. तक सीरा बना लेती हैं जिसका बाजार में मूल्य 180 से 260 रुपए प्रति किलो तक मिल जाता है। इससे उन्हें महीने में 15 से 20 हजार रुपए की आय हो रही है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ने के बाद उनके कार्य में निखार आया।

उत्पादों की बिक्री के लिए सरकार की ओर से आयोजित सरस मेले बेहतरीन मंच साबित हुए हैं। मंडी जिला मुख्यालय पर भी सेरी मंच में सप्ताह के अंतिम दो दिन इन समूहों के उत्पादों के लिए बिक्री स्थल चिह्नित किए गए हैं। हिम इरा के माध्यम से भी उनके उत्पाद अच्छे दामों पर बिक रहे हैं। गत दिनों सुंदरनगर में महिला दिवस के अवसर पर उन्होंने भेलपुरी – नींबू पानी का स्टॉल लगाया जिससे उन्हें लगभग 12 हजार रुपए की आमदनी हुई। रक्षाबंधन पर सेवईयां व अन्य त्यौहारों पर भी विशेष उत्पाद तैयार करती हैं।

सावणी देवी ने कृषि विज्ञान केंद्र से खाद्य प्रसंस्करण में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और मास्टर ट्रेनर के रूप में भी सीरा – बड़ियां व आचार इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण देती हैं। आशीष ग्राम समूह की प्रधान भी हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के प्रयासों से घर में ही बैठी रहने वाली महिलाओं को बाहर जाकर कार्य करने का अवसर मिला है जिसके लिए वह प्रदेश सरकार की आभारी हैं।

ग्राम पंचायत चंडयाल की ही निर्मला देवी, आकृति, पायल, खिमी देवी, अनिता, चिंता, माया, मीना इत्यादि महिलाएं इस स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर रही हैं। पंचायत की तारा देवी ने बताया कि उनका उपचार पीजीआई चंडीगढ़ से चल रहा है। पैसों की जरूरत महसूस हुई तो वह इस समूह के लिए बाहरी तौर पर काम करने लगीं। इससे उनकी आजीविका बढ़िया से चल रही है। महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में सरकार के प्रयासों के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू का आभार व्यक्त किया है।

# प्रदेशभर में मोबाइल वैटर्नरी यूनिट के माध्यम से किया जा रहा पशुओं का ईलाज

## 31,110 पशुपालकों को 50 प्रतिशत अनुदान पर गर्भित पशु आहार प्रदान

ग्रामीण जन जीवन में पशुधन का विशेष महत्त्व है। ग्रामवासियों द्वारा पशुओं को पूजा जाता है क्योंकि पशुधन मानव का पोषण करने सहित आजीविका का साधन भी होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की पशुधन पर निर्भरता तथा ग्रामीण आर्थिकी में इसके योगदान को देखते हुए प्रदेश सरकार में पशुपालकों के हित में कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सर्वप्रथम अपनी चुनावी गारंटी को पूरा करते हुए सरकार द्वारा गाय और भैंस के दूध पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा अपने अढ़ाई वर्ष के कार्यकाल में पशुपालकों के हितार्थ विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

घर – द्वार पर उत्कृष्ट पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए मोबाइल वैटर्नरी यूनिट की स्थापना की गई है तथा 44 चिकित्सा पशु वाहन क्रय कर प्रदेशभर में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। किसी भी प्रकार के रोग अथवा अन्य समस्याओं के लिए 1962 टॉल फ्री हेल्पलाइन आरम्भ की गई है। इस दूरभाष के माध्यम से अब तक पशु रोग से संबंधित 18723 तथा अन्य जानकारी से संबंधित 17850 मामले प्राप्त हुए हैं जिनका निपटारा मोबाइल वैटर्नरी यूनिट तथा पशुपालन विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्राथमिकता के आधार पर किया गया है।

गरीबी रेखा से नीचे रह रहे पशुपालकों को पशुपालन के लिए प्रोत्साहन करने के ध्येय से सरकार द्वारा गर्भित पशु आहार योजना का सफल क्रियान्वयन किया जा रहा है। सरकार द्वारा इस योजना के तहत अभी तक 31 हजार 110 पशुपालकों को 50 प्रतिशत अनुदान पर गर्भित पशु आहार उपलब्ध करवाया गया है।

प्रदेश सरकार द्वारा पशु पालन क्षेत्र को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से उठाए गए विभिन्न कदम जमीनी स्तर पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सफल रहे हैं। पशु पालकों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने तथा किसानों के लिए अतिरिक्त आय के आकर्षक स्त्रोत के रूप में दुग्ध आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है। ऐतिहासिक पहल करते हुए गाय एवं भैंस के दूध पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान कर ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य बना है। वर्तमान में प्रदेश सरकार प्रतिदिन औसतन 38400 पशुपालकों से 2 लाख 25 हजार लीटर गाय का दूध 51 रुपये प्रति लीटर के समर्थन मूल्य पर खरीद रही है। इसी प्रकार प्रतिदिन औसतन 1482 पशुपालकों से 7800 लीटर भैंस का दूध 61 रुपये प्रति लीटर समर्थन मूल्य पर गुणवत्ता के आधार पर खरीदा जा रहा है।

प्रदेश सरकार ने पायलट आधार पर 70 रुपये प्रति लीटर की दर से बकरी के दूध की खरीद भी आरम्भ की है। इसके अलावा नई दुग्ध उपार्जन सहकारी समितियों का गठन किया जा रहा है तथा इनमें अब तक 5166 किसानों को जोड़ा गया है।

हिम कुक्कुट पालन योजना के तहत 602500 एक दिन की आयु के व्यावसायिक ब्रॉयलर चूजे वितरित किए गए हैं और 155 व्यावसायिक ब्रॉयलर इकाइयों की स्थापना के लिए 6 करोड़ 13 लाख रुपये की राशि आवंटित की गई है। पशुपालन विभाग द्वारा 21वीं पशुधन गणना का कार्य निर्धारित समय अवधि में किया गया है।

पशुपालन को बढ़ावा देने व पशुपालकों के लिए इस क्षेत्र को आर्थिक रूप से आकर्षक बनाने के लिए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में प्रदेश सरकार द्वारा उठाए गए कदम सराहनीय हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन प्रयासों से न केवल पशुपालन युवाओं के लिए घर – द्वार पर जीविकोपार्जन का विश्वसनीय ज़रिया बनेगा बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संबल प्रदान करते हुए प्रदेश के विकास में सहयोगी भी बनेगा।

# हिमालयी जलवायु में बढ़ता तीव्र परिवर्तन, भविष्य में भयानक आपदाओं को निमंत्रण

राजन कुमार शर्मा

**शिमला।** जैसा कि हिमालयी क्षेत्र वर्तमान में जलवायु – प्रेरित चुनौतियों से जूझ रहा है, जो आपदा जोखिम और ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को बढ़ा रहे हैं। ये मुद्दे विशेष रूप से हीटवेव, ग्लेशियर पिघलने, बादल फटने और चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति के संदर्भ में दबावपूर्ण हैं। भारतीय हिमालयी क्षेत्र में अभूतपूर्व हीटवेव का अनुभव हो रहा है, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से अधिक दर्ज हो रहा है। तापमान में यह वृद्धि पारंपरिक मौसम पैटर्न को बाधित कर रही है, जिससे मानसून के आगमन में देरी हो रही है और आर्द्रता बढ़ रही है, जो हीटस्ट्रोक और निर्जलीकरण जैसे स्वास्थ्य जोखिमों को बढ़ाती है। विशेषज्ञ इन परिवर्तनों को ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, जो व्यापक हीट एक्शन प्लान और जलवायु – लचीले बुनियादी ढांचे की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। ग्लेशियर पिघलना और ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ (GLOFs) बढ़ते तापमान हिमालय में ग्लेशियरों के पिघलने को तेज कर रहे हैं, जिससे ग्लेशियल झीलें बन रही हैं। इनमें से कई झीलें खतरनाक स्थानों पर स्थित हैं, और उनके फटने की संभावना से निचले इलाकों के समुदायों के लिए बाढ़ का बड़ा खतरा पैदा हो सकता है, उदाहरण के लिए, भूटान ने 17 संभावित खतरनाक ग्लेशियल झीलों की पहचान की है, जहाँ संवेदनशील क्षेत्रों में पूर्व चेतावनी प्रणाली लागू की जा रही है। इसी तरह, नेपाल में थाम ग्लेशियल झील के फटने से आई बाढ़ ने बेहतर निगरानी और आपदा तैयारियों की आवश्यकता को रेखांकित किया। हिमाचल प्रदेश राज्य के लाहौल स्पीति, किन्नौर, कुल्लू के क्षेत्रों में सैटेलाइट चित्रण के माध्यम से इस तरह की खतरनाक झीलों को चिन्हित किया गया है तथा उन पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है। चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि के कारण हिमालयी क्षेत्र में बादल फटने, भूस्खलन और अचानक बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में तेजी से वृद्धि हुई है। अकेले हिमाचल प्रदेश में, ऐसी घटनाओं की संख्या 1970 और 2010 के बीच सालाना दो से चार से बढ़कर 2023 में 53 हो गई है। ये घटनाएँ अक्सर तीव्र वर्षा के कारण होती हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण आम होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप होने वाली आपदाएं न केवल जानमाल की हानि करती हैं, बल्कि बुनियादी ढांचे और आजीविका को भी बाधित करती हैं। इसके अतिरिक्त जलवायु – प्रेरित आपदाएँ हिमालय में समुदायों को पलायन करने के लिए मजबूर कर रही हैं, जिससे शहरी क्षेत्रों में भीड़भाड़ बढ़ रही है और अनौपचारिक बस्तियों का विस्तार हो रहा है। इस प्रवास के परिणामस्वरूप अक्सर सांस्कृतिक पहचान का नुकसान होता है और सामाजिक – आर्थिक चुनौतियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, बढ़ते तापमान के कारण प्रजातियाँ अपने पारंपरिक आवासों से बाहर जा रही हैं। उल्लेखनीय रूप से, नेपाल के एवरेस्ट क्षेत्र में 1,000 से 2,700 मीटर की ऊँचाई पर किंग कोबरा के देखे जाने की सूचना मिली है, जो उनके सामान्य निचले इलाकों के आवासों से काफी अलग है। इस तरह के पारिस्थितिक बदलाव मानव – वन्यजीव संघर्षों के जोखिम को बढ़ाते हैं, जिससे आपदा प्रबंधन प्रयासों के लिए अतिरिक्त चुनौतियाँ पैदा होती हैं।

आपदा प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन के लिए रणनीतियां

इन परस्पर जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने के लिए, इन बिंदुओं पर सरकार काम कर सकती है:

बढ़ी हुई निगरानी और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली

ग्लेशियल झीलों और मौसम के पैटर्न की निगरानी के लिए उन्नत तकनीकों को लागू करने से समय पर अलर्ट मिल सकते हैं और सक्रिय उपाय करने में सुविधा हो सकती है।

सतत् अवसंरचना विकास

पर्यावरण के अनुकूल निर्माण प्रथाओं को प्राथमिकता देना और भवन संहिताओं को लागू करना भूस्खलन और अन्य जलवायु – प्रेरित आपदाओं के जोखिम को कम कर सकता है।

समुदाय – आधारित आपदा जोखिम न्यूनीकरण

शिक्षा और आपदा तैयारियों में भागीदारी के माध्यम से स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना लचीलेपन को मजबूत कर सकता है।

सीमा पार सहयोग डेटा साझा करने और संयुक्त आपदा प्रतिक्रिया के लिए सीमाओं के पार सहयोग करना क्षेत्रीय तैयारियों को बढ़ा सकता है। इसके लिए हम अपने पड़ोसी देश के साथ उचित समन्वय व डाटा आदान – प्रदान कर सकते हैं।

अंत में केवल इतना कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए तत्काल और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है। स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग के माध्यम से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना, वनों की कटाई को नियंत्रित करना, टिकाऊ पर्यटन को बढ़ावा देना और स्थानीय संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना महत्वपूर्ण है। नीतियों को मजबूत करना, जलवायु जागरूकता में सुधार करना और लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करना ग्लेशियरों, जैव विविधता और पर्वतीय समुदायों की आजीविका को संरक्षित करने में मदद करेगा। हिमालय एक महत्वपूर्ण जलवायु बफर है – क्षेत्रीय और वैश्विक पारिस्थितिकी संतुलन के लिए उनकी सुरक्षा आवश्यक है।

# राज्य सरकार आलू का समर्थन मूल्य घोषित करेगी:मुख्यमंत्री

**शिमला/शैल।** मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने ने कहा है कि प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। ऊना ज़िला में लगभग 20 करोड़ रुपये की लागत आलू प्रसंस्करण संयत्र स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शीघ्र ही आलू का समर्थन मूल्य घोषित करेगी, जिससे किसानों की आर्थिकी को बल मिलेगा।

मुख्यमंत्री यहां हिमाचल प्रदेश रिवाइटलाइजिंग रेनफेड एग्रीकल्चर नेटवर्क द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बहु-हितधारक परामर्श सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे।

प्राकृतिक खेती के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आगामी वर्ष अनेक नवीन योजनाएं कार्यान्वित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि असंतुलित भोजन से लोगों में पोषण से संबंधित समस्याओं में बढ़ौतरी दर्ज की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के उत्तरी-पूर्वी राज्यों के बाद हिमाचल प्रदेश में कैंसर के मामलों में सबसे अधिक बढ़ोतरी देखी जा रही है। खान-पान की आदतों में बदलाव भी इसका मुख्य कारण हो सकता है। इसका पता लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की 80 प्रतिशत आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि हिमाचल की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में इसका लगभग 14 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में मौसम में जिस प्रकार से प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिला है, वह कृषि के लिए चिंताजनक है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में हरित ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित

किया जा रहा है। प्राकृतिक खेती से उत्पादित फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया गया है। सरकार आने वाले समय में प्राकृतिक खेती उत्पादों के समर्थन मूल्य में और बढ़ोतरी करेगी तथा यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहेगी। सुक्खू ने कहा कि जलवायु सहनशील कृषि, दालें और व्यापक पशुपालन एवं चरवाहों को बढ़ावा, पारंपरिक बीज प्रणाली का अधिक उपयोग, जल सुरक्षा और मृदा संरक्षण पर बल आदि ऐसे कदम हैं जिनके माध्यम से हम इन चुनौतियों का मज़बूती से सामना कर सकते हैं। ऐसे पारंपरिक बीज और फसलें हैं जो कि प्राकृतिक खेती से उगती हैं, पोषण से भरपूर होती हैं तथा पानी की आवश्यकता भी कम रखती है। हमें ऐसी पारंपरिक फसलों को पुन: इस्तेमाल में लाना होगा। इनमें शोध के माध्यम से और सुधार लाना होगा ताकि हम भावी पीढ़ी को पैष्टिक आहार व स्वच्छ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकें।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्राकृतिक खेती के अनुभवों पर आधारित पुस्तक का विमोचन भी किया। उन्होंने प्राकृतिक खेती से जुड़े प्रदेश के किसानों की सराहना करते हुए सरकार द्वारा इस दिशा मे किए जा रहे प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी।

पदम श्री नेक राम शर्मा ने मुख्यमंत्री को कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने जल, जंगल, जमीन को बचाने सहित मोटे अनाज के महत्त्व पर भी चर्चा की।

इस अवसर पर विधायक हरीश जनारथा, पदम श्री हरिमन, कृषि विशेषज्ञ डॉ. सभ्यसाची दास, कृषि विशेषज्ञ, कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न हितधारक, कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

# फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना के लिए 55.51 करोड़ जारी:मुकेश अग्निहोत्री

**शिमला/शैल।** कांगड़ा ज़िला की बहु-प्रतीक्षित फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना के लिए केंद्र सरकार ने 55.51 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत और जारी कर दी है। यह स्वीकृति प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (एआईबीपी) के तहत दी गई है।

यह स्वीकृति उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की केंद्रीय मंत्रियों और संबंधित विभागों के साथ निरंतर वार्ता का प्रतिफल है। सरकार के गठन के पश्चात उप-मुख्यमंत्री ने परियोजना के लंबित मामलों को प्राथमिकता दी और केंद्र के समक्ष मजबूत पक्ष रखा।

यह परियोजना पिछले एक दशक से अधर में लटकी हुई थी, लेकिन अब यह कांगड़ा जिले के किसानों के लिए आशा की नई किरण बनकर सामने आयी है। इस योजना के पूर्ण होने से हजारों हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा मिलेगी, जिससे क्षेत्र की कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि होगी।

अग्निहोत्री ने कहा कि यह स्वीकृति किसानों के भविष्य को संवारने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हमारी सरकार हर किसान को पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

# विक्रमादित्य सिंह ने केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से भेंट की

**शिमला/शैल।** लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने दिल्ली में केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से भेंट की।

उन्होंने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण घटासनी-शिल्हा-बधानी-भूभूजोत-कुल्लू सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि पठानकोट-मनाली-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग के लिए एक वैकल्पिक मार्ग की अत्यंत आवश्यकता है। इससे लगभग 55 किलोमीटर की दूरी भी कम हो जाएगी। यह सड़क एक स्थाई राजमार्ग के रूप में कार्य करेगी जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में भी सहायता मिलेगी।उन्होंने केन्द्रीय मंत्री से इस परियोजना को मंजूरी देने का आग्रह किया।राजनाथ सिंह ने राज्य को हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया।

# स्वास्थ्य मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में एचपीएमएफडीसी की 53 वीं बैठक आयोजित

**शिमला/शैल।** हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम (एचपीएमएफडीसी) की 53वीं बैठक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ.

(कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

बैठक के दौरान निगम द्वारा राज्य में अल्पसंख्यक समुदायों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं गतिविधियों की समीक्षा की गई। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि विभिन्न जिलों में अल्पसंख्यक समुदायों को निगम की योजनाओं के बारे में जागरूक करने के लिए आयोजित किए गए जागरूकता शिविरों को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।

एचपीएमएफडीसी अल्पसंख्यक समुदायों को पर्यटन एवं कृषि अथवा कृषि संबंधित गतिविधियों, पारंपरिक व्यवसायों, कारीगरी, तकनीकी या लघु उद्योगों, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र हेतु अधिकतम 30 लाख रुपये तक के टर्म लोन की सुविधा प्रदान करता है। इन कार्यों में जनरल स्टोर, ढाबे, कपड़े की दुकान, डेयरी यूनिट, मेडिकल शॉप, कंप्यूटर शॉप, टेंट हाउस, नाई की दुकान, टयूबवेल, मधुमक्खी पालन और टैक्सी इत्यादि की स्थापना, सुदृढ़ीकरण अथवा विस्तार शामिल हैं।

निगम द्वारा अधिकतम 20 लाख रुपये तक की शिक्षा ऋण सुविधा भी प्रदान की जाती है, साथ ही स्वयं सहायता समूहों को ऋण और मशीनरी एवं उपकरण खरीदने हेतु भी ऋण उपलब्ध कराए जाते हैं।

डॉ. शांडिल ने योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सामुदायिक स्तर पर सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक संगठनों की सक्रिय भागीदारी से योजनाओं का बेहतर प्रचार-प्रसार और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित होगा। इससे जानकारी का अभाव भी मिटेगा और योजनाओं का लाभ अधिक लोगों तक पहुंचेगा।

वित्त वर्ष 2024-25 में निगम द्वारा 150 लाभार्थियों को कुल 8.71 करोड़ रुपये वितरित किए गए। वहीं, हिमाचल प्रदेश दिव्यांग वित्त एवं विकास निगम (एचपीडीएफडीसी) द्वारा 65 दिव्यांगों को 4.37 करोड़ रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई।

31 मार्च 2025 तक एचपीएमएफडीसी द्वारा 106.56 करोड़ रुपये के ऋण 3635 लाभार्थियों को वितरित किए गए हैं जबकि एचपीडीएफडीसी द्वारा 64.05 करोड़ रुपये के ऋण 1962 लाभार्थियों को प्रदान किए गए हैं। एचपीएमएफडीसी के अधिकांश लाभार्थी सिरमौर (1590), शिमला (589), सोलन (390), चंबा (315), बिलासपुर (286), मंडी (253), कुल्लू (56), कांगड़ा (43), ऊना (38), किन्नौर (18), लाहौल-स्पीति (11) तथा हमीरपुर (8) से हैं।

बैठक में 2025-26 के लिए राजस्व बजट, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए आंतरिक एवं वैधानिक ऑडिटरों की नियुक्ति तथा निदेशकों की नियुक्ति सहित विभिन्न एजेंडों पर चर्चा कर उन्हें स्वीकृति दी गई।

डॉ. शांडिल ने कहा कि राज्य सरकार सभी वर्गों, विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के समावेशी विकास और सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन कर रही है।

इस अवसर पर एचपीएमएफडीसी के प्रबंध निदेशक मनोज कुमार, सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अशीष सिंहमार, निदेशक इसोमसा सुमित खेमटा, विशेष सचिव (वित्त) विजय वर्धन और निदेशक मंडल के सदस्य उपस्थित थे।

# मंत्री ने रिक्त व अनुपयोगी भवनों की जानकारी सात दिनों में देने के निर्देश दिए

**शिमला/शैल।** नगर एवं ग्राम नियोजन और आवास मंत्री राजेश धर्माणी ने विभिन्न विभागों के अनुपयोगी रिक्त भवनों की समीक्षा और इनके उपयोग के लिए कैबिनेट सब-कमेटी की बैठक की अध्यक्षता करते हुए निर्देश दिए कि इस संदर्भ में सभी विभाग सात दिनों के अंदर जानकारी उपलब्ध करवाएं।

बैठक में जानकारी दी गई कि अभी तक केवल 21 विभागों ने इस बारे में सूचना भेजी है जबकि लगभग 50 अन्य विभागों से वांछित सूचना मिलना बाकी है।

प्रदेश के सभी उपायुक्तों और विभागों, बोर्डों तथा एसडीएम के अंतर्गत उप-मण्डल स्तर पर गठित कमेटियों के अध्यक्ष एक सप्ताह में इस संदर्भ में जानकारी उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए गए।

# हिपा और जीआईज़ी ने समझौता ज्ञापन पर किए हस्ताक्षर

**शिमला/शैल।** संगठनात्मक सहयोग की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम उठाते हुए शिमला स्थित डॉ. मनमोहन सिंह हिमाचल प्रदेश लोक प्रशासन संस्थान और डयूश गेसेलशाफ्ट फर इंटरनेशनल जुसामेनारबीट जीआईज़ी, भारत ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

सचिवालय में आयोजित एक औपचारिक समारोह में हिपा की निदेशक रूपाली ठाकुर की उपस्थिति में सचिव प्रशिक्षण और विदेशी असाइनमेंट सी. पालरासू और जीआईज़ी इंडिया की ओर से राजीव अहल द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य 'समृद्ध हिमाचल-2045' के लिए सहयोग करना और 20 वर्षीय विजन दस्तावेज़ तैयार करना है।

यह समझौता ज्ञापन प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, ज्ञान समर्थन, समन्वय समर्थन, नीति दिशा-निर्देशों और आवश्यक संस्थागत प्रणालियों आदि के माध्यम से 'समृद्ध हिमाचल-2045' को लागू करने और बढ़ावा देने के लिए दोनों पक्षों के बीच आपसी सहयोग के दायरे को परिभाषित करता है। इस पहल के प्रमुख लक्ष्य समूह नागरिक, विशेषज्ञ, अधिकारी, मीडिया, समाजिक संगठन, शैक्षणिक और शोध संस्थान, तकनीकी और ज्ञान प्रदाता संगठन तथा निर्वाचित राजनीतिक प्रतिनिधि हैं।

यह पहल एक सार्थक साझेदारी की शुरुआत का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना और सामूहिक अंतर्दृष्टि तथा संवाद के माध्यम से समकालीन मुद्दों को संबोधित करना है।

# बिजली कनैक्शन एवं अन्य बिजली सम्बंधित सेवाएँ ऑनलाइन और सुविधाजनक

श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू
माननीय मुख्य मन्त्री
हिमाचल प्रदेश

## समय बचाएं और घर बैठे आसानी से
## बिजली कनैक्शन प्राप्त करें

सभी सेवाएं हिमाचल प्रदेश स्टेट इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड लि. के उपभोक्ता पोर्टल पर उपलब्ध हैं।
अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट www-hpseb.in पर जाएँ ।

ऑनलाईन मोड के माध्यम से बिजली **कनैक्शन** के लिए आवेदन करने से पहले आवेदक को तैयार रखना होगा :

- टैस्ट रिपोर्ट की स्कैन की गई प्रतिलिपि (फाइल का आकर <=150kb)।
- 50/- रुपये के गैर-न्यायिक स्टॉम्प पेपर।

**ऑनलाईन बिजली कनैक्शन आवेदन करने के लिए बोर्ड की वेबसाईट www.hpseb.in में Consumer Portal आइकन पर जायें और आवश्यक दस्तावेजों को बताए गए चरणबद्ध तरीकों से अपलोड करें।**

1 **आवश्यक** दस्तावेजों को अपलोड करें : टैस्ट रिपोर्ट की स्केन की गई प्रतिलिपि (फाइल का आकार <=150kb)

2 स्वामित्व का प्रमाण पत्र और आपत्ति प्रमाण पत्र (NOC) जो की टाउन प्लानिंग या नगर निगम या नगर पंचायत या क्षेत्र के अन्य शहरी स्थानीय निकाय आदि से जारी किया गया हो।

3 पहचान प्रमाण दस्तावेज : (Pan Card/Aadhar Card/Driving Licence/Passport/Voter Id Card).

## नोट करें :

- उपभोक्ताओं को अपलोड किए गए दस्तावेजों की मूलप्रति प्रतिष्ठान की जांच (Field Inspection) के दौरान अथवा डाक के माध्यम से सम्बंधित विद्युत उपमंडल में **शीघ्र अति शीघ्र** जमा करवानी होगी।
- इसके बाद, सिस्टम आवेदन की स्थिति पर नजर रखने के लिए A&A फॉर्म और एक संदर्भ संख्या i.e. उपभोक्ता आईडी उत्पन्न करेगा जिसे ईमेल **एवं मोबाईल** नंबर के माध्यम से आवेदक को सूचित किया जाएगा।

CONSUMER SERVICES

| | | |
|---|---|---|
| Vendor Invoice Management System (For Contractors/Firms) | HPSEBL Consumer Portal | IPP Payment Portal |
| Employee & Pensioner Portal | Quick Energy Bill Payment | RE Projects Connectivity |
| Online Guest House Booking Portal | Online New Connection | Management Dashboard |

**ऑनलाइन बिजली बिल भुगतान, नए बिजली कनैक्शन के भुगतान एवं बिजली मीटर सम्बंधित सेवाओं और बिजली आपूर्ति एवं शिकायत करने सम्बंधित जानकारी।**

- बिजली बिल भुगतान के लिए वेबसाइट www.hpseb.in पर जाकर Quick Energy BIII Payment पर क्लिक करें
- नए बिजली कनैक्शन के भुगतान के लिए वेबसाइट www.hpseb.in पर जाकर Consumer Portal पर क्लिक करें
- बिजली मीटर सम्बंधित सेवाओं जैसेकि Name, Load, Category इत्यादि बदलने के लिए वेबसाइट www.hpseb.in पर जाकर Consumer Portal पर क्लिक करें
- शिकायतों और बिजली आपूर्ति सम्बंधित किसी भी जानकारी के लिए टोल फ्री न० 1800-180-8060 या 1912 पर सम्पर्क करें

मोबाइल पर भी घर बैठे बिजली आपूर्ति, बिजली बिल, बिल भुगतान और सभी सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए www.hpseb.in पर Register/Update/Mobile No-/Email ID पर पूरी जानकारी **अपडेट करें।**

# हिमाचल प्रदेश स्टेट इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड लि.

- विद्युत सम्पर्क -


सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

# भ्रष्टाचार के अहम मुद्दों पर प्रदेश भाजपा की खामोशी सवालों में

**शिमला/शैल।** क्या व्यवस्था परिवर्तन में भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच न करना भी शामिल है? क्या व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर विपक्ष का भी गंभीर मुद्दों पर खामोश रहना शामिल है? क्या व्यवस्था परिवर्तन के नाम जनता की सुविधा केवल भाषणों तक ही सीमित रह गई है? यह सारे सवाल इसलिये उठ रहे हैं क्योंकि भ्रष्टाचार पर जो आचरण पूर्व सरकार का था वहीं कुछ इस सरकार में भी हो रहा है। पूर्व सरकार में भ्रष्टाचार के उन आरोपों पर भी कोई कारवाई नहीं हुई जो भाजपा ने बतौर विपक्ष अपने आरोप पत्रों में लगाये थे। कोविड काल में हुई कई खरीदें विवादित रही और मामले बने लेकिन उन मामलों का क्या हुआ वह आज तक सामने नहीं आ पाया है और सरकार बदलने के बाद कांग्रेस ने भी उसी परंपरा को निभाने का आचरण जारी रखा है। बल्कि विधानसभा चुनावों के दौरान जो आरोप पत्र पूर्व सरकार के खिलाफ जनता में जारी किया था उस पर भी कोई कारवाई नहीं हुई हौ भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वाले दोनों सरकारों में बराबर प्रताड़ित होते रहे हैं।

स्व. विमल नेगी की मौत इसी वस्तुस्थिति का ही परिणाम है। क्योंकि 2023 में ही पॉवर कारपोरेशन में व्यापक भ्रष्टाचार को लेकर एक पत्र वायरल हुआ था उस पत्र का गंभीरता से संज्ञान नहीं लिया गया बल्कि जिन पत्रकारों ने उस पत्र पर सरकार से गंभीर सवाल पूछे उन्हें ही प्रताड़ित किया गया। यदि उस पत्र का गंभीरता से संज्ञान ले लिया जाता तो शायद विमल नेगी प्रकरण न घटता। इसी तरह कांग्रेस नेता बैंस ने जो आरोप विजिलैन्स को सौंपी अपनी शिकायत में लगा रखे हैं उन आरोपों का न तो कोई खंडन किसी कोने से आया है और न ही विजिलैन्स ने उन आरोपों पर अभी तक कोई कारवाई की है। जबकि बैंस शायद विजिलैन्स को यह चेतावनी भी दे चुके हैं कि यदि इन आरोपों की जांच के लिये उन्हें विजिलैन्स मुख्यालय से बाहर अनशन पर भी बैठना पड़ा तो वह ऐसा भी करेंगे। क्योंकि बैंस के खिलाफ कांगड़ा के ऋण मामले को लेकर जो मामला दर्ज किया गया था उसमें बैंस को प्रदेश उच्च न्यायालय से जमानत मिल चुकी है और जमानत के फैसले में मान्य उच्च न्यायालय ने अधिकारियों के आचरण पर जिस तरह की टिप्पणियां कर रखी है उससे बैंस द्वारा लगाये गये आरोपों की गंभीरता और गहरा जाती है। भ्रष्टाचार पर शिमला के एस.पी. रहे संजीव गांधी ने अपनी एल. पी.ए. में मुख्य सचिव और डीजीपी के आचरण पर जिस तरह के सवाल उठा रखे हैं उससे भी सरकार की भ्रष्टाचार पर मानसिकता ही उजागर होती है। यह अलग विषय है कि यदि संजीव गांधी को एल.पी.ए. दायर न करनी पड़ती तो शायद सरकार के इन शीर्ष चेहरों पर यह नकाब न उतरती। लेकिन इस में यह सब सामने आने के बाद भी सरकार अपने स्तर पर इन बड़ों के खिलाफ कोई कारवाई नहीं कर पा रही है। सरकार का यह आचरण भी सरकार के भ्रष्टाचार के प्रतिरूख को ही स्पष्ट करता है।

लेकिन इसी सब में विपक्ष की भूमिका पर भी गंभीर सवाल उठने शुरू हो गये हैं। इस सरकार ने लैण्ड सीलिंग एक्ट में संशोधन कर बेटियों को हक देने का विधेयक पारित किया है। लेकिन यह विधेयक लाये जाने से पूर्व सरकार ने इस बारे में कोई आंकड़े नहीं जुटाये हैं कि लैण्ड सीलिंग एक्ट तो 1974 में पारित होकर 1971 से लागू हो चुका है। ऐसे में पिछले पचास वर्षो में ऐसे कितने मामले आज भी प्रदेश में मौजूद हैं जिनमें यह एक्ट लागू ही नहीं हो सका है। या ऐसे कितने नये मामले खड़े हो गये हैं जिन्होंने सीलिंग एक्ट को अंगूठा दिखाते हुए आज सीलिंग से अधिक जमीन इकठ्ठी कर ली है। यह एक बहुत ही संवेदनशील मामला है और इस पर भविष्य में सवाल अवश्य उठेंगे। लेकिन इस मामले पर विपक्ष की खामोशी अपने में ही कई सवाल खड़े कर जाती है ।क्योंकि विपक्ष जब देहरा विधानसभा उपचुनाव के दौरान कांगड़ा केंद्रीय सहकारी बैंक धर्मशाला और जिला कल्याण अधिकारी द्वारा 78.50 लाख रुपए बांटे जाने की अपने ही भाजपा प्रत्याशी द्वारा राज्यपाल को सौंपी गई शिकायत पर चुप है तो स्पष्ट हो जाता है कि भ्रष्टाचार के इस हमाम में सब बराबर के नंगे हैं। जनता को भ्रमित करने के लिये कुछ ऐसे मद्दों को उछाला जा रहा है जिसे सत्तारूढ़ सरकार और विपक्ष की आपसी रस्म अदायगी जनता के सामने आती रहे। प्रदेश के वित्तीय संकट पर दोनों पक्ष इस रस्म अदायगी को ही तो निभा रहे हैं। जब बढ़ते कर्ज से भविष्य लगातार असुरक्षित होता जा रहा है लेकिन इस मुद्दे पर रस्म अदायगी से ज्यादा कुछ नहीं हो रहा है।

# केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने डॉ.दीपक पुरी की सराहना की

**शिमला/शैल।** केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने चंडीगढ़ और रोम में हाइब्रिड मॉडल पर आयोजित 15वें

कार्डियोमर्सन ग्लोबल कॉन्फ्रेंस के दौरान भारत में हृदय रोगों के व्यापक प्रबंधन के लिए इंटीग्रेटेड अप्रोच को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिये शिमला के सीनियर कार्डियक सर्जन डॉ. दीपक पुरी की सराहना की।

नड्डा ने कहा, ''मैं पिछले 15 वर्षो में कार्डियोमर्सन के योगदान की सराहना करता हूं, जिसने सुरक्षित और लागत प्रभावी हस्तक्षेप प्रदान करने के लिए नवीनतम और उन्नत तकनीकों के बारे में जागरूकता फैलाई है। कार्डियोमर्सन व्यापक प्रबंधन की सबसे उपयुक्त भूमिका पर जोर देने में एक सराहनीय काम कर रहा है, जिसमें हृदय संबंधी समस्याओं के बढ़ते खतरे के प्रबंधन में प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक रोकथाम के साथ-साथ रिहैबिलिटेशन भी शामिल है।''

इस बीच ग्लोबल कॉन्फ्रेंस के दौरान, मैक्स हॉस्पिटल, मोहाली में सीटीवीएस के सीनियर डायरेक्टर के रूप में कार्यरत डॉ. पुरी ने दो प्रेजेंटेशन दीं। अपने पहले प्रेजेंटेशन में उन्होंने यूनिपोर्टल वीडियो -असिस्टेड थोरैकोस्कोपिक सर्जरी का एक नया संशोधन पेश किया, जो एक ऐसी तकनीक है जो जटिल थोरेसिक प्रोसीजर को एक ही 3 सेमी चीरा के माध्यम से करने की अनुमति देती है। विशेष रूप से डिज़ाइन किये गये रिट्रैक्टर और एक रिफाइंड एंटीरियर- पोस्टीरियर अप्रोच के साथ, यह संशोधित यूनिपोर्टल वीडियो - असिस्टेड थोरैकोस्कोपिक सर्जरी ओपन थोरैकोटॉमी के तुलनीय प्रत्यक्ष दृश्य प्रदान करता है, जबकि पोस्टऑपरेटिव दर्द, लागत और रिकवरी समय को कम करता है।

अपने दूसरे प्रेजेंटेशन में उन्होंने तेजी से बिगड़ते इस्केमिक हार्ट फेलियर के प्रबंधन को संबोधित किया। यह एक ऐसी स्थिति जो अक्सर मल्टी-वेसल कोरोनरी धमनी रोग वाले रोगियों में देखी जाती है, जो दिल के दौरे की शुरुआत के बाद देर से मौजूद होती है और तेजी से बिगड़ती है लेकिन पर्क्यूटेनियस हस्तक्षेप के लिए अयोग्य होती है।

25 देशों के 112 प्रतिष्ठित विशेषज्ञ अत्याधुनिक विज्ञान को वास्तविक दुनिया के नैदानिक अभ्यास से जोड़ने के लिए एकत्रित हुए। उन्नत रोबोटिक्स और एआई-संचालित निदान से लेकर नई शल्य चिकित्सा तकनीकों और निवारक स्वास्थ्य पहलों तक कॉन्फ्रेंस में हृदय विज्ञान में अग्रणी अनुसंधान, एआई में नवाचारों और हृदय देखभाल के लिए समग्र दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया।

## यह है नड्डा का पत्र

जगत प्रकाश नड्डा
JAGAT PRAKASH NADDA

मंत्री
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
व रसायन एवं उर्वरक
भारत सरकार
Minister
Health & Family Welfare
and Chemicals & Fertilizers
Government of India

MESSAGE

I am happy that Cardiomersion is organising the 15th Global Conference on Integrated Approach to Deliver Comprehensive Management of Cardiovascular Diseases. It is a matter of great pride that more than 100 reputed Faculty from 25 countries apart from India, including USA, UK, China, Canada, Australia, Germany, Russia and Italy are going to deliver updates on the rapidly evolving technology advances equally matched with advanced skills currently used in the management of complex Cardiovascular problems.

Cardiovascular diseases have now become one of the leading cause of illness and death worldwide. The Government of India, under the visionary leadership of the Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi ji, is committed to provide world class Healthcare to every citizen of India. Our Government is committed to take all possible steps to transform Indian Healthcare System to handle the current healthcare issues as well as to ensure that we become global leaders of future Healthcare.

I appreciate the contribution of Cardiomersion over the last 15 years for spreading awareness about the latest & advanced technologies for providing safe and cost effective interventions. Cardiomersion has been doing a commendable job in emphasizing the most appropriate role of comprehensive management which includes Primordial, Primary and Secondary prevention as well as Rehabilitation in the management of rising menace of Cardiovascular problems.

I congratulate the entire team of Cardiomersion lead by Dr. Deepak Puri for organising such an impactful conference.

(Jagat Prakash Nadda)

कार्यालय: 348, ए-स्कंध, निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011 • Office: 348, A-Wing, Nirman Bhawan, New Delhi-110011
Tele. : (O): +91-11-23061661, 23063513 • Telefax: 23062358 • E-mail: min-hfm@gov.in